DSE 01
SOCIOLOGY OF RELIGION
CHARACTERISTICS OF SECULARISATION

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

लौकिकीकरण की विशेषताएँ

Characteristics of Secularisation

बुद्धिवाद का विकास—धर्मनिरपेक्षीकरण के कारण प्रत्येक घटना के लिये धर्म पर आश्रित रहने की बात समाप्त हो जाती है। आदिम व्यक्ति प्रत्येक सामाजिक घटना को धर्म तथा अलौकिक शक्ति की देन मानता था लेकिन जैसे-जैसे बुद्धिवाद का विकास हुआ कार्य-कारण सम्बन्धों की व्याख्या बढ़ी और वास्तविक कारणों की जानकारी के कारण धर्म का महत्त्व कुछ कम हुआ। अब प्रत्येक व्यक्ति तार्किक व्यवहार को उचित मानता है।

धार्मिकता में ह्रास—धर्मनिरपेक्षीकरण के कारण धार्मिक संस्थाओं का महत्त्व अब कम हुआ है। इसका कारण यह है कि धर्म के नाम पर अब उच्च या निम्न प्रस्थिति का निर्धारण नहीं होता। पहले जो व्यक्ति जितने अधिक धार्मिक कर्मकाण्ड करता था उसे उतना ही अधिक सम्मान दिया जाता था। लेकिन अब उसी व्यक्ति को पिछड़ा हुआ व्यक्ति कहा जाता है जो अपने कार्यों की सफलता को धर्म में ढूँढ़ता है। अतः स्पष्ट है कि जैसे–जैसे धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया आगे बढ़ती है धर्म का महत्त्व कम होता है, और इस प्रकार धार्मिकता में ह्रास होता है।

बढ़ता हुआ विभिन्नीकरण–पहले प्रत्येक घटना के पीछे धर्म को प्रभावी कारक मान लिया जाता था और प्रत्येक घटना की व्याख्या धर्म के ही आधार पर की जाती थी चाहे वह अपराध हो या बीमारी, मृत्यु हो या प्राकृतिक प्रकोप। लेकिन अब प्रत्येक घटना के अलग–अलग और वास्तविक कारणों की खोज की जाती है जिसमें सामान्यत: धार्मिक और आध्यात्मिक शक्ति के प्रभाव को कम से कम स्वीकारा जाता है। इस स्थिति के कारण विभिन्नीकरण की मात्रा बढ़ जाती है। विशिष्ट प्रकार के कार्य करने वाले अलग–अलग लोग होते हैं। अत: उनमें दूरी स्वाभाविक है।

आधुनिकीकरण की प्राप्ति में सहायक—वर्तमान में आधुनीकरण की लहर बड़े जोरों पर है। प्रत्येक समाज अब अपने को आधुनिक कहलाना चाहता है। जिसके लिये आवश्यक हो जाता है कि परम्परागत व्यवहारों में परिवर्तन लाया जाए। धर्मनिरपेक्षीकरण भी परम्परागत व्यवहारों को बदलता है। यथा—स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारत में विभिन्न धर्म और धर्मवाद की भावना खूब फलफूल रही थी। किन्तु स्वतन्त्रता संग्राम से ही जो धर्म धर्मनिरपेक्षीकरण की स्वाभाविक लहर उठी उसने इस प्रयास को बहुत कम कर दिया। स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर ज्यों ही भारत ने अपने को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया, यहाँ के परम्परागत व्यवहार प्रतिमानों में अमूल परिवर्तन आए। वर्तमान में देश में ऐसे परिवर्तन हो रहे हैं जो सामाजिक विकास और आधुनिकीकरण के लिये आवश्यक हैं। अतः कहा जा सकता है कि धर्मनिरपेक्षीकरण आधुनिकीकरण में सहायक है।

समानता का विकास–प्राचीन काल में भारतवर्ष में अनेक प्रकार की सामाजिक विभिन्नताएँ पाई जाती थीं। भारत में धर्म, जाति, लिंग आदि के आधार पर विस्तृत विभेद किया जाता था। एक ही प्रकार के अपराध करने पर भिन्न–भिन्न धर्मों में भिन्न–भिन्न दण्ड का प्रावधान था। लेकिन धर्मनिरपेक्षीकरण के कारण इस प्रकार का भेदभाव स्वतः समाप्त हो जाता है और सभी लोगों को समान अवसर सुलभ हो पाते हैं।

एक वैज्ञानिक अवधारणा–धर्मनिरपेक्षीकरण एक वैज्ञानिक अवधारणा है। धर्म के प्रभाव के कारण कार्य-सम्बन्ध का प्रदर्शन उचित नहीं। अत: लोग अतार्किक हो जाते हैं। धर्मनिरपेक्षीकरण तार्किकता पर प्रबल जोर देता है और उसी चीज को सही कहता है जिसमें कार्य–कारण सम्बन्धों का प्रदर्शन हो।

मानवतावादी और तटस्थ अवधारणा–धर्मनिरपेक्षीकरण एक ऐसी अवधारणा है जिसमें मानव को मानव मानते हुए व्यवहार की बात कही गई है। ऐसा नहीं कि किसी भी काल्पनिक जैसे जाति के आधार पर मानव के साथ अमानवीय व्यवहार की बात करती हो। यह प्रक्रिया मानवतावादी व्यवहार को प्रोत्साहित करती है। साथ ही यह एक तटस्थ अवधारणा है जिसमें एक तरफ धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं पाया जाता तो साथ ही किसी भी धर्म को स्वीकारने की पूर्ण स्वतन्त्रता भी दी गई है।